प्राक्कथन

भारतीय दर्शन जीवन और जगत् को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर समझने का प्रयास करता है। जिज्ञासा दर्शन की जननी है। मैं क्या हूँ? यह जगत् क्या है? इस सम्पूर्ण सृष्टिचक्र का लक्ष्य क्या है? इत्यादि प्रश्न प्रत्येक मननशील व्यक्ति के मन में जागते हैं। भारतीय दर्शन की सभी प्रणालियों ने अपनी–अपनी दृष्टि से जीवन तथा जगत् के गहन प्रश्नों का समाधान करने का प्रयास किया है। सभी की अपनी दृष्टि है। इसी कारण उनके समाधानों में भी भिन्नता है, परवर्ती दार्शनिकों के मध्य यह भिन्नता तीव्र विरोध में परिणत हो गयी। वैसे तो 'वाद' सत्यान्वेषण में अत्यन्त सहायक है। "वादे–वादे जायते तत्त्वबोधः" इस उक्ति में यथार्थ है। अरस्तू ने कहा है कि कुछ लोग किसी विषय के एक पक्ष को देखते हैं तथा कुछ दूसरे पक्ष को, किन्तु सब मिलकर सभी पक्षों को देख सकते हैं। विभिन्न मस्तिष्कों का सम्मिलित सहयोग सत्यानुसन्धान में सहायक होता है, यदि वस्तुतः लक्ष्य सत्य का अन्वेषण हो, किन्तु यदि विपक्षी का मानमर्दन ही एकमात्र उद्देश्य हो तो वाद, जन्य या वितण्डा में बदल जाता है, जिससे मात्र बहस के लिए बहस करने में आनन्द आता है। यह स्थिति सत्य तक पहुँचने में बाधक सिद्ध होती है। दुर्भाग्य से भारतीय दर्शन का एक युग ऐसा रहा है, जिसमें यह प्रवृत्ति प्रधानतः परिलक्षित होती है। डॉ० राधाकृष्णन ने इसे पेशेवर दर्शन की संज्ञा दी है।

उस युग में दार्शनिकों ने जिस तीक्ष्णता से एक–दूसरे के मतों का खण्डन किया है, उसे देखकर तो यही धारणा बनती है कि भारतीय दार्शनिकों के चिन्तन का मुख्य उद्देश्य विपक्षी का मतध्वंस ही है, किन्तु दार्शनिक चिन्तन का

मुख्य उद्देश्य तो सत्य का अनुसंधान होता है और इस मार्ग में असत्य प्रतीत होने वाले मत की आलोचना भी करनी पड़ती है, किन्तु दूसरे के मत की धैर्य एवं निष्पक्षता के साथ समीक्षा करना आवश्यक है, क्योंकि क्या पता हमारा मत भी असत्य हो, दूसरे का सत्य हो। प्रत्यक्ष वस्तुओं के सम्बन्ध में तो अधिक मतभेद का अवसर नहीं होगा, किन्तु अप्रत्यक्ष पदार्थ के सम्बन्ध में विचार करते हुए मतभेद की पूरी सम्भावना है। प्रत्यक्ष की हुई वस्तु के सम्बन्ध में यदि मतभेद है, तो इसका कारण यह होगा कि एक ने उस वस्तु के एक पक्ष कर प्रत्यक्ष किया होगा, दूसरे ने दूसरे पक्ष का, किन्तु जिस पदार्थ का प्रत्यक्ष नहीं हुआ है, उसके विषय में विचार करते हुए अपने मत का दुराग्रह क्यों? उस विषय में अपना–अपना अनुसंधान और तर्क प्रस्तुत करने का अधिकार प्रत्येक विचारशील को है। सम्भव है कि दूसरे का मत सत्य हो, सम्भव यह भी है कि सभी मतों में सत्य का कुछ–कुछ अंश हो। प्रत्येक स्थिति में दुराग्रह रहित दृष्टि और सामन्जस्य स्थापित करने की क्षमता आवश्यक है, सत्य प्राप्ति के लिए।

यद्यपि भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों के विद्वान अपने–अपने मत की पुष्टि और दूसरे मतों का खण्डन करने के लिए घोर प्रयत्न करते दिखायी देते हैं, किन्तु क्या इन सब दार्शनिक विचारधाराओं का प्रारम्भ केवल विवाद या बुद्धि विलास के लिए ही हुआ है? ऐसा मानना न्याय संगत नहीं होगा। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि प्रत्येक दर्शन–प्रणाली का प्रारम्भ सत्य की जिज्ञासा और सत्य को निरूपित करने की इच्छा से हुआ है। यदि सत्य के सम्बन्ध में उनके अनुसंधान और अनुभव भिन्न–भिन्न रहे हैं, तो इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने सत्य के भिन्न–भिन्न पक्ष का साक्षात् दर्शन एवं वर्णन किया हो, साथ ही अधिकारि भेद से किये गये वर्णन को या कथन शैली के भेद

को गम्भीर मतभेद मानना उचित नहीं है।

यदि एक–दूसरे के विचार से स्पष्ट असहमति परिलक्षित होती है, तो भी हमें यह सोचना चाहिए कि सत्य प्राप्ति के लिए किये गये छोटे–से–छोटे प्रयत्न का भी महत्व है। भले ही कोई विचार बाद में सर्वथा असत्य प्रमाणित हो, किन्तु न केवल वैचारिक स्वतन्त्रता के लिए विविध विचारों का प्रतिपादन उपादेय है, अपितु सत्य को सत्य के रूप में प्रमाणित होने के लिए विरोधी युक्तियों और तर्कों की कसौटी पर कसा जाना आवश्यक है। उन विविध विचारों में कोई एक सत्य हो सकता है या उन सबमें सत्य का अंश हो सकता है। उन विचारों को छानकर सत्य–सत्य का विवेक यदि अपेक्षित है, तो चाहिए एक समन्वयात्मक दृष्टि। यह दृष्टि रखने वाले प्राचीन आचार्यों में विज्ञानभिक्षु कुमारिल भट्ट, माध्वाचार्य, मधुसूदन सरस्वती तथा आधुनिक विद्वानों में डॉ० राधाकृष्णन, डॉ० भगवानदास, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, डॉ० आदित्यनाथ झा के नाम प्रमुख हैं। प्रायः इन विचारकों का यह मन्तव्य है कि समस्त दार्शनिक समुदाय सोपान रूप है, जो कि अधिकार भेद से भिन्न–भिन्न प्रकारों का वर्णन करते हुए व्यक्ति को क्रमशः परम् आनन्द तक पहुँचाने में सहायक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बौद्धिक षड्दर्शनों में अविरोध की स्थापना की है। पं० उदयवीर शास्त्री एवं आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने इन षड्दर्शनों में परस्परिक विरोध न होने का विस्तृत विवेचन किया है।

भारत में दर्शन जीवन की एक पद्धति है, यहाँ कोई भी दार्शनिक शिक्षा ऐसी नहीं थी, यहाँ तक कि सांख्य की भी नहीं, जो केवल एक मौखिक शब्द या सम्प्रदायगत रूढ़िवाद रह गयी हो। प्रत्येक सिद्धान्त को एक ऐसी ओजस्वी श्रद्धा के रूप में जीवन में परिवर्तित पर दिया गया, जिसने मनुष्य के हृदय को उद्वेलित

किया तथा चैतन्य से परिपूर्ण कर दिया। वैदिक मतानुयायी हों या जैन अथवा बौद्ध सभी की दृढ़ दार्शनिक पृष्ठभूमि रही है तथा सभी दर्शन–शाखाओं ने भारतीय समाज को समय–समय पर नयी दिशा दी है। इसी कारण सभी दर्शन प्रणालियों का अपना महत्व है, इसी पक्ष को ध्यान में रखकर भारतीय दर्शन–पद्धतियों का अध्ययन अभीष्ट है।

प्रायः सभी भारतीय दार्शनिक मतवादों का लक्ष्य एक जीवन पद्धति का निरूपण करना है, जिसका अनुसरण करके व्यक्ति जीवन में दुःख का आत्यन्तिक विरोध कर सके, दुःख निरोध को लक्ष्य में रखकर ही ज्ञान मीमांसीय एवं तत्त्व मीमांसीय समस्याओं का समाधान किया गया है। कहा जा सकता है कि चार्वाक को छोड़कर सभी दार्शनिक मतवादों का लक्ष्य एक ही रहा है। समान लक्ष्योन्मुखी होने के कारण दार्शनिक प्रणालियों में कतिपय बिन्दुओं पर मतैक्य भी पाया जाता है। भारतीय संदर्भ में मत वैभिन्य की परिणति लक्ष्यों की भिन्नता में नहीं होती। भारतीय दार्शनिकों की कुछ सर्वमान्य स्थापनाएँ हैं, जिन्हें अपने–अपने ढंग से, तर्कों से पुष्ट करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय के अन्तर्गत भारतीय दर्शन की भूमिका, द्वितीय अध्याय में जगत् सम्बन्धी विचार, तृतीय अध्याय में चेतना सम्बन्धी विचार, चतुर्थ अध्याय में कर्म एवं पुनर्जन्म सम्बन्धी विचार, पंचम अध्याय में ईश्वर सम्बन्धी विचार, षष्ठ अध्याय में मोक्ष सम्बन्धी विचार तथा सप्तम् अध्याय में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है, अन्त में विस्तृत सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची दी गयी है।

आभारोक्ति

किसी शोध-कार्य हेतु आन्तरिक प्रेरणा, रचनात्मक नियोजन एवं बाह्य समस्या की आवश्यकता होती है, जो श्रेष्ठ गुरू के संगत एवं कृपा से तैयार होता है। यह प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध परमपूज्य गुरुवर शोध-निर्देशक **डॉ० बी० पाण्डेय,** भूतपूर्व विभागाध्यक्ष-दर्शनशास्त्र विभाग, काशी नरेश राजकीय पी०जी० कालेज, ज्ञानपुर, सन्तरविदासनगर, भदोही (उ०प्र०) (सम्प्रति-कुलपति, जगद्गुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट) के संगत एवं कृपा का परिणाम है। अतः मैं उनके विद्वतापूर्ण मार्ग निर्देशन, आशीर्वाद एवं प्रदत्त वात्सल्य प्रेम के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ और श्रद्धेय गुरुवर का आजीवन ऋणी रहूँगा।

साथ ही मैं **डॉ० विजय कान्त दुबे**, विभागाध्यक्ष-दर्शनशास्त्र विभाग, काशी नरेश राजकीय पी०जी० कालेज, ज्ञानपुर, सन्तरविदासनगर, भदोही (उ०प्र०) एवं **डॉ० पन्नालाल दुबे,** प्राचार्य, काशी नरेश राजकीय पी०जी० कालेज, ज्ञानपुर, सन्तरविदासनगर, भदोही (उ०प्र०) का आभारी हूँ, जिनका आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ।

मैं **डॉ० एन०पी० सिंह**-रसायन विज्ञान विभाग, **डॉ० ओ०पी० सिंह सोलंकी**-वनस्पति विज्ञान विभाग, **डॉ० अरुण सिंह**-दर्शनशास्त्र विभाग, **डॉ० दलसिंगार सिंह**-दर्शनशास्त्र विभाग एवं **डॉ० राजेश कुमार सिंह**-दर्शनशास्त्र विभाग, तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर के सहयोग के लिए इनका सदैव ऋणी रहूँगा। **डॉ० संजय सिंह, डॉ० शिवपूजन पाण्डेय एवं डॉ० अवनीश अस्थाना** का मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे इस शोध प्रबन्ध को पूर्णता प्रदान करने में अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया।

'मातृवत सर्वभूतेषु' कथनानुसार समूची वृत्तियों को वात्सल्य एवं ममता के आँचल में छुपाकर समस्याओं एवं विघ्न-बाधाओं से मुक्त कर सजल स्नेहिल शुभाशीषों से मार्ग को आलोकित करने वाली ममतामयी माँ **श्रीमती सरस्वती सिंह** एवं परम् पूज्य पिता **श्री शिवनारायण सिंह** एवं बड़ी माता **श्रीमती अनुसुइया सिंह** व बड़े पिता **डॉ० एच०बी० सिंह,** कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमांचल प्रदेश के स्नेह,

आशीर्वाद व विश्वास स्वरूप यह शोध-प्रबन्ध पूर्णता को प्राप्त कर सका। मैं अपने बड़े भाई **श्री ज्ञानेश सिंह** एवं भाभी **श्रीमती अनीता सिंह**, भाई **विजय सिंह** एवं भाभी **श्रीमती ममता सिंह**, बहन **श्रीमती अर्चना सिंह,** बहनोई **श्री पंकज सिंह,** बड़ी बहन **डॉ० (श्रीमती) साधना सिंह**-गृहविज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद व बहनोई **डॉ० अशोक सिंह**, आचार्य नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद तथा मैं अपनी पत्नी **डॉ० (श्रीमती) श्वेता सिंह** एवं पुत्र **कुँवर अर्पित सिंह** के सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं उन विद्वज्जनों के प्रति श्रद्धापूर्वक आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी महान् कृतियों के सहयोग से मेरा शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका। इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष एवं महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी, काशी नरेश राजकीय पीजी कालेज, ज्ञानपुर, सन्तरविदासनगर, भदोही व तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर आवश्यक शोध सामग्री उपलब्ध करायी।

शोध-प्रबन्ध कलात्मक रूप में प्रस्तुत हो, यह किसी भी शोधार्थी की इच्छा रहती है। इस सुकार्य हेतु मैं अस्थाना कम्प्यूटर्स, टी0डी0 कालेज रोड, जौनपुर (कम्प्यूटर टाइपिंग तथा लेजर सेटिंग में कुशल) टाइपिस्ट **श्री हेमन्त कुमार अस्थाना** व **अनन्त कुमार अस्थाना** व **अमन कुमार अस्थाना** जिन्होंने सुरुचि पूर्वक कार्य में पूरी दिलचस्पी लेते हुए मेरे कार्य को शीघ्रता से सम्पन्न किया। इस हेतु आप सभी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

अन्ततः, प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में अज्ञानतावश आयी किसी भी त्रुटि हेतु पुरोधाओं से क्षमा प्रार्थी हूँ, क्योंकि कोई भी कृति अपने में पूर्ण नहीं होती, इसलिए जो भी है, जैसा भी है आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

कुँवर दरोगा सिंह

कुँवर दरोगा सिंह
शोधार्थी